ममता कालिया का बाल साहित्य

पल्लव

I

हिन्दी में बच्चों और बड़ों के लेखन में बड़ी दूरियां हैं। सामान्यतः हिन्दी के लेखक बच्चों के लिए नहीं लिखते। अगर लिखते भी हैं तो उसे अपने मुख्य लेखन के समकक्ष देखना या देखा जाना उन्हें पसन्द नहीं होता। वे इसे क्षतिपूर्ति या भलाई में किए गए काम से ज्यादा नहीं समझते। ऐसे में दिक्कत यह होती है कि मुख्यधारा के बड़े कहे जाने वाले लेखकों की अक्सर कमजोर किताबें बच्चों को देखने को मिलती हैं और बच्चों के लेखन के नाम पर ऐसे लेखक काबिज रहते हैं जिनका बौद्धिक स्तर चिन्ताजनक है या जो आधुनिकता नाम के विचार से ही अनभिज्ञ हैं। ममता कालिया की इधर कोई छह किताबें आगे-पीछे आई हैं जो बच्चों और किशोरों के लिए लिखी गई हैं। ममता कालिया हिन्दी कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में बड़ा नाम हैं। उनकी प्रतिष्ठा ऐसी लेखिका के रूप में है जिनका लेखन मूलतः आसपास के जीवन की विसंगतियों से टकराते हुए बनता है और जो सामाजिकता के विचार को स्वीकारते हुए लेखन में लगातार प्रयोग करती हैं। उनका यह लेखन भी सामाजिकता के विचार से जुड़ा है और दुखी-दीन मनुष्यता के संकट यहां भी आ रहे हैं। देखना चाहिए कि उनका बर्ताव किस तरह का है। क्या वे भी भगवान सबका भला करे या जैसी इनके साथ बीती वैसी किसी के साथ न बीते का सनातनी उपदेश दे रही हैं या कुछ और बात भी है?

'कमाल का है मन्नू' उनका उपन्यास है जो किशोरों के लिए लिखा गया है और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परीषद्, नई दिल्ली (एनसीईआरटी) जैसी प्रतिष्ठित संस्था ने इसे प्रकाशित किया है। हिन्दी में बच्चों के लिए फिर भी कुछ लिखा जाता है और काम किया जाता है-नंदन, बाल भारती और चकमक इसके प्रमाण हैं लेकिन महान राष्ट्र के निर्माण में लगी सुमन सौरभ के अतिरिक्त किशोरों के लिए कोई पत्रिका हो तो मैं भी जानकर लाभ लेना चाहूंगा। काश जूले बर्न हिन्दी के लेखक होते। बहरहाल, ममता जी के इस उपन्यास के केन्द्र में बोर्ड के इम्तिहान की तैयारी करने वाला किशोर मानस है और उसके कारनामे। मानस को उसकी दादी मन्नू कहती है और यह वाकई कमाल का है। पढ़ने में आलसी और दुनिया भर के गुंताड़ेबाजी में लगा हुआ। कभी रेडियो खोलकर जोड़ देता तो कभी म्युजिक प्लेयर। और तो और तमाम दुर्घटनाएं भी उसके साथ होती हैं। अच्छी बात यह है कि उसकी दीदी और मम्मी-पापा का भरोसा उस पर है। जब सब डरे हैं कि यह फेल हो जाएगा तब वह न केवल फर्स्ट डिविजन लाता है बल्कि राज्य भर में उसके वैज्ञानिक मॉडल को पहला नंबर मिलता है। आशय छिपे नहीं हैं कि अगर हमने इन बिगड़ैल दिख रहे बच्चों पर जरा भी भरोसा किया तो वे बड़े परिणाम दे सकते हैं। यहां मन्नू के दोस्त हैं और गर्ल फ्रेंड्स भी हैं- वर्जनाओं से मुक्त इस परिवार का मुखिया कॉलेज का अध्यापक है। क्या वर्जना मुक्त पिता और परिवार के होने से मन्नू की छिपी संभावनाएं उजागर हो सकीं? अगर ऐसा है तो यह किताब किशोरों को बच्चा समझने वाले सभी माता-पिताओं को पढ़ लेनी चाहिए।

बच्चों की किताबों में सबसे पहले है 'ऐसा था बजरंगी'-बाल लघु उपन्यास, जिसमें एक अनाथ बच्चे बजरंगी की कहानी है, उतार-चढ़ाव से भरी और दुखी-दीन मनुष्यता के संकट का चित्र दर्शाने वाली। यह एक बच्चे की कहानी है और इसके पाठक भी बच्चे ही होंगे। संभवतः इसलिए यहां हिंसा और वर्जित बातें नहीं हैं तथापि एक

लेखक परिचय

लगभग एक दशक से हिन्दी साहित्य का अध्यापन, हिन्दी की लघु पत्रिका 'बनास जन' के संपादक। संप्रति : हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में साहित्य के प्राध्यापक हैं।

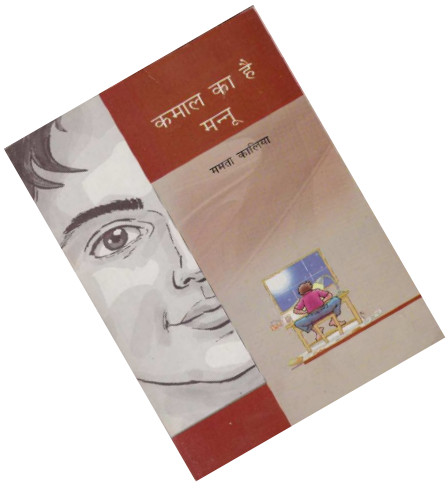

'कमाल का है मन्नू'
प्रकाशक : एनसीईआरटी,
श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली-110016
मूल्य : 40 रुपये

छोटे बच्चे का पिता और मां को खो देना क्या कम करुणापूर्ण है? बजरंगी के रूप में ममता जी एक याद रह जाने वाला चरित्र रचती हैं और उसका हौसला सलाम करने जैसा है। वह घरेलू काम करते-करते प्रेस का काम सीखता है और अंत यह है कि राशन कार्ड में अपना नाम परिवार के साथ देखकर खुशी से भर जाता है। बजरंगी की कहानी क्या कहती है? श्रम का सम्मान! मनुष्यता की जय! बच्चे का हौसला! शायद सब। असल बात यह है कि ममता कालिया एक ऐसा चरित्र रच पाने में सफल रही हैं जो पाठक को याद रह जाता है। मां की आखिरी निशानी थाली को सुबह बेचकर जब वह शाम को उसे फिर खरीदने जाता है तब साहित्य के जानकार पाठकों को महान संघर्षशील चरित्र याद आ सकते हैं। अच्छी बात यह है कि सारे संकट के बावजूद वह महान नहीं है और उसके प्रयत्न सामान्य मनुष्यों के प्रयत्न ही हैं।

'बब्बू की बुआ' किताब में एक ही कहानी है जो लम्बी है और बब्बू के निम्न वर्गीय जीवन कि कथा कहती है। यहां प्रारम्भ में एक और बच्चा आया है प्रदीप जिसके पास गुल्लक है, जो स्कूल जाता है, जिसकी मम्मी बब्बू को भी हमेशा कोई न कोई चीज खाने को देती है। आगे पढ़ने पर पता चलता है कि बब्बू का साधारण परिवार गरीबी का मारा है और इन्हें दो जून की रोटी भी मयस्सर नहीं। ऐसे में बब्बू की बुआ दीवाली मनाने आ जाती है तो बब्बू के परिवार की चिन्ता गहरा जाती है कि अब क्या होगा? यहां इस परिवार को नजदीक से देखना कई पाठकों के लिए नया होगा क्योंकि अब गरीबी का उल्लेख राजनेताओं के भाषणों में भले होता हो, टीवी पर गरीब नहीं दिखते; न ही फिल्मों में। दवाई की शीशी टूट जाने पर बब्बू की पिटाई होना दुख से भर देता है और तब प्रतीत होता है कि सचमुच गरीबी से बड़ा कोई दुख नहीं।

'शाबाश चुन्नू' किताब चुन्नू की कहानी है और उसकी पहली पंक्ति है-'नन्हा चुन्नू तो बस आफत था।' यह आफत लाने वाला बच्चा कभी अपनी आया मैरी को सताता है तो कभी मां को। यहां तक कि नए खरीदे जूतों की मुक्ति अगले ही दिन चाकू से कर देता है। इसकी जिद है स्कूल नहीं जाना। अन्ततः एक दिन धोखे से उसे स्कूल भेज दिया जाता है और देखिए तो उसे धीरे-धीरे वहां इतना रस मिलता है कि अब उसे खाना भी मैरी के हाथ का नहीं स्कूल का ही पसन्द है। असल में उसकी ऊर्जा को स्कूल ने रचनात्मक कार्यों में लगाकर उसे एक अनुशासित विद्यार्थी बना

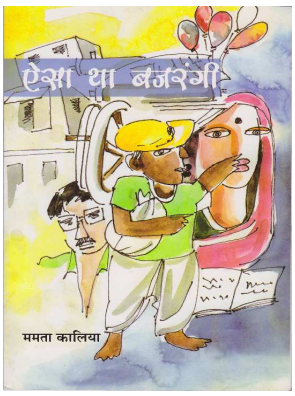

'ऐसा था बजरंगी'
मूल्य : 40 रुपये

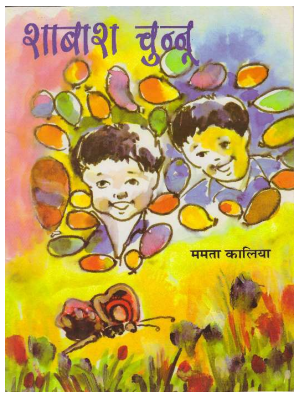

'शाबाश चुन्नू'
मूल्य : 40 रुपये

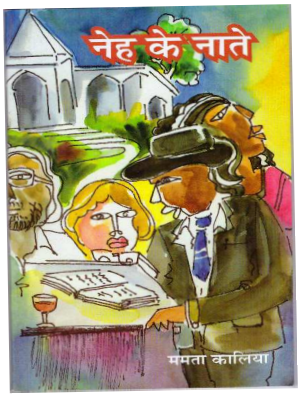

'नेह के नाते'
मूल्य : 40 रुपये

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया लोदी रोड, नई दिल्ली-110003

दिया। सवाल यह है कि क्या यह ठीक है? पता नहीं? अगर चुन्नू जैसे बच्चे शाबाशी लेने के लालच में सवाल पूछना बन्द कर देंगे, अगर वे व्यवस्था के लाड़ले बन जाएंगे तो सचमुच बुरी बात होगी।

'पांच बाल कहानियां' में कहानियां हैं और इन्हें छोटे बच्चों को ध्यान में रखकर लिखा गया है। अनुशासन प्रियता, प्रकृति और पशु-पक्षियों से प्रेम इन कहानियों के विषय हैं तो स्वतंत्र व्यक्तित्व की तरफ बढ़ रहे बच्चे इनके पात्र हैं। 'बन्दर और मोबाइल' कहानी में शरारती और थोड़ी-थोड़ी जिद्दी बूटी को एक बन्दर सबक सिखाता है तो 'देबू का गुस्सा' में मम्मी-पापा से रूठ गए देबू को चाची मनाने में सफल होते हैं। 'नए दोस्त' में बेटू से मिलने चूजे आए हैं। 'निक्की' रक्षाबंधन की कहानी है जब बहुत खर्च कर रहे और बहुत खुश दिखाई देने की कोशिश कर रहे मामाजी के संकट को निक्की समझ जाती है। 'बोबो' की दिशा अपना व्यक्तित्व खुद बनाने की तरफ बढ़ रही है और अपने डॉक्टर पापा को साफ कहती है-'मुझे लगता है डॉक्टर बहुत बेरहम होते हैं। बीमार आदमी की मजबूरी से वे कमाई करते हैं।' जब पापा कहते हैं कि बीमारी ठीक भी तो वे ही करते हैं, इस पर उसका जवाब है-'आप ही तो कहते हैं- बहुत-सी बीमारियां वक्त के साथ अपने आप ठीक हो जाती हैं। मैं बहस नहीं करना चाहती पर मैं कलाकार बनना चाहती हूं।' दिशा पर दबाव है कि वह भी डॉक्टर बने। संग्रह की कहानियां प्रभावशाली हैं और रोचक भी।

'पाँच बाल कहानियाँ'
प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ,
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया लोदी रोड,
नई दिल्ली-110003
मूल्य : 40 रुपये

'नेह के नाते' सामरसेट मॉम के प्रसिद्ध उपन्यास 'ऑफ ह्यूमन बान्डेज' का संक्षिप्त रूपान्तरण है। इस आत्मकथात्मक उपन्यास को नए पाठकों के लिए पढ़ना रोचक होगा क्योंकि यहां एक साधारण आदमी के संघर्ष और उत्थान की कहानी है। ममता कालिया विदेशी परिवेश और वातावरण के बावजूद आत्मीय और प्रवाहपूर्ण भाषा से इसकी पुनर्रचना करती हैं। 1915 में छपे इस उपन्यास को हिन्दी के नए पाठकों के लिए उपलब्ध होना वाकई महत्त्वपूर्ण है।

एक टिप्पणी इन किताबों की सज्जा-चित्रों के बारे में भी की जानी चाहिए। 'कमाल का है मन्नू' में जहां अच्छे चित्र और सज्जा है वहीं बाकी की किताबों में सामान्य या औसत। आश्चर्य यह है कि भारतीय ज्ञानपीठ जैसे संस्थान से आने पर भी इनकी साज-सज्जा का पक्ष कमजोर है।

अन्त में कहा जा सकता है कि ममता जी का यह लेखन उनके मुख्य लेखन से कतई भिन्न और दोयम नहीं है क्योंकि यहां भी ममता जी नए जमाने के परिवर्तनों को देख-समझ रही हैं, भिड़ते ही उनकी निन्दा नहीं करतीं। 'कमाल का है मन्नू' में परीक्षा के तनाव से गुजरते किशोरों का वर्णन हो या 'शाबाश चुन्नू' में नर्सरी के बच्चे का रोजनामचा पाठक की उत्सुकता रचना में बनी रहे इसमें ममता जी सदैव सफल हैं तो वाजिब सवाल बन सकें इसकी गुंजाइश भी वे बनाए रखती हैं। इन रचनाओं में इलाहाबाद बार-बार आता है और उसके गली-मुहल्ले भी पात्र बनते दिखते हैं। उनकी पीढ़ी के अन्य कथाकार-रचनाकार भी इस तरफ आएं और हलचल करें तो बच्चों और किशोरों का साहित्य संपन्न ही होगा।

II

इधर एक मार्मिक चित्रकथा पढने को मिली। मार्मिक इसलिए क्योंकि आम तौर पर हम चित्रकथाओं में मनोरंजक कथाएं, महापुरुषों की जीवनियां आदि ही पढ़ते आए हैं। लेकिन यह एक ऐसी चित्रकथा है जो इतिहास की एक बहुत बड़ी त्रासदी की याद दिलाती है और फिर उदास कर देती है। 'नीरव संध्या का शहर/साकुरा का देश' जापानी लेखक

कोनो फुमियो की लिखी चित्रकथा है और इसका विषय है हिरोशिमा त्रासदी। इसका हिंदी अनुवाद वाणी प्रकाशन से आया है। अनुवाद किया हैटोमोको किकुचि ने।

जापान में हिरोशिमा जैसे समुद्र तटीय शहरों में हर रोज सुबह और शाम को नियमित समय में हवा एकदम बंद हो जाती है और थोड़ी देर के लिए नीरवता छा जाती है, जिस नीरव संध्या को जापानी भाषा में यूनागि कहा जाता है। 'नीरव संध्या का शहर' में यह बताया गया है कि हिरोशिमा की एक औरत मिनामि 1945 में परमाणु बम की दुर्घटना में बच गई लेकिन इस संत्रास के साथ जीते हुए कि परिवार, रिश्तेदार, मित्र सभी मर गए, वही क्यों बच गई? इस तरह जीवित बचना भी तो एक त्रासदी है, जिसकी छाया में आज भी हिरोशिमा के लाखों लोग जी रहे हैं। जो बच गए, आगे आने वाली पीढियां... दुःख की एक याद है जो वहां के लोग आने वाली संततियों को सौंपते हैं।

एक दिन परमाणु बम के रेडियेशन फैलने के दस साल के बाद वह बीमार पड़ती है और मर जाती है। उस समय हिरोशिमा में नीरव संध्या थी। इतने बरस बीत गए लेकिन जापान में आज भी नीरव संध्याएं आती रहेंगी, न उसका अंत है न उस दुःख का जिसने सारा सुख, सारा आनंद छीन लिया- एक शहर का, शायद एक मुल्क का।

दूसरी चित्रकथा है 'साकुरा का देश'। यह कहानी है उन संतानों की जिनके माता-पिताओं के साथ हिरोशिमा की त्रासदी हुई थी। इन बच्चों के ऊपर रेडियेशन का असर बताया जाता है और कोई भी डॉक्टर यह नहीं बता सकता है कि उनके साथ कब क्या हो जाए, वे कब बीमार पड़ जाएं, कब उनकी मौत हो जाए। उनके साथ शादी-ब्याह में भी भेदभाव किया जाता है। दुनिया भर में जीवित इंसान रहते हैं लेकिन हिरोशिमा जैसे शहरों के बारे में यह कहा जाता है कि वहां सिर्फ मृत इंसान रहते हैं। त्रासदी के इतने साल बाद भी वहां के लोगों को लगता रहता है कि वे मृत इंसान हैं। यह अपने आप में बड़ी त्रासदी है।

लेखिका ने पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि 'जिस संसार में जापान और हिरोशिमा स्थित है उसी संसार को प्रेम करने वाले सभी पाठकों के लिए मैंने यह कहानी लिखी है'। ये दोनों चित्रकथाएं इस बात की याद दिलाती हैं कि जब तक परमाणु बम इस संसार में रहेगा तब तक दुनिया के हर पाठक के साथ इस कहानी के साकार होने की संभावना बनी रहेगी।

अनुवाद अच्छा है। हमें अपने बच्चों को यह किताब जरूर पढ़ानी चाहिए ताकि वे इस बात से आगाह हो सकें कि परमाणु निरस्त्रीकरण कितना जरूरी है, इस सुन्दर दुनिया का आनंद उठाने के लिए शांति कितनी जरूरी है। ◆